शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

समाज पर मोबाइल के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्राप्तिः 12.09.2023
स्वीकृतः 20.09.2023

राम कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
महाराज सिंह कॉलेज, सहारनपुर
ईमेलः *ram2kumar0@gmail.com*

73

सारांश

वर्तमान समय में मोबाइल फोन व्यक्ति की जरूरत के साथ–साथ मुश्किल भी खड़ी कर रहा है। कोविड के समय के बाद आज मनुष्य इसका अधिक आदी हो गया है। अध्ययन में जनपद मुजफ्फरनगर में लोगों पर पडने वाले मोबाइल फोन के प्रभाव का अध्ययन किया गया है आज के संदर्भ में शोध अध्ययन का महत्व और भी बढ जाता है क्योंकि मोबाईल फोन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होने के साथ–साथ एक नई महामारी के रूप में सामने आने वाला है जिसमें समाज के अलगाव के साथ–साथ व्यक्ति के स्वास्थ्य का संकट तथा परिवारिक रिश्तों में दरार का मुख्य कारण हो गया है। आधुनिक समाज सामाजिक संबंधों का न होकर मोबाइल फोन का जाल बन चुका है। इसकी उपयोगिता तथा प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले दो दशकों में भारत में मोबाइल फोन का उपयोग समाज के उच्च वर्ग से आरम्भ होकर निम्नतम वर्ग तक, सरकारी – गैर–सरकारी संस्थानों में, बूढ़ों तथा बच्चों तक सभी में समान रूप से पर्याप्त प्रचलन में आ चुका है। मोबाइल को जहाँ एक ओर समाज को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित किया है, वहीं दूसरी ओर यह समाज की चिन्ता का भी विषय बन गया है। भारत में औसतन एक परिवार में एक से अधिक मोबाइल फोन हैं। एक जमाना था जब मोबाइल फोन का मतलब सिर्फ इतना था कि इससे फोन किया और सुना जा सकता था हालांकि यह तब भी एक आश्चर्य की तरह था क्योंकि इसे हाथ में लेकर कहीं भी आ–जा सकते थे। जब हम किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक उपयोग करते हैं तो वह हमारे ऊपर प्रभाव भी अधिक डालता है।

मुख्य बिन्दु

मोबाइल, सामाजिक संबंध, सूचना तंत्र, मानसिक तनाव आदि।

प्रस्तावना

आज सूचना तंत्र विश्व की धुरी है। सम्पूर्ण विश्व सूचनाओं के इर्द–गिर्द ही मंडरा रहा है। सत्य एवं प्रमाणिक सूचनाएं ही किसी भी निजी प्रतिष्ठान अथवा सरकारी कार्यालय का आधार है। सूचनाओं का अपना एक विस्तृत क्षेत्र है। सूचनाओं की कोई एक सीमा नहीं है और इसके प्रकार भी असीम है इन सूचनाओं को प्रेशित करने एवं प्राप्त करने के लिए विभिन्न तकनीक एवं आधुनिक यंत्र अपनाए जाते हैं।

हमारे दैनिक जीवन में भी सूचनाओं को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। सूचनाओं का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए नित नये प्रयोग एवं प्रयत्न होते रहे हैं। डाक सेवा, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन, रडार एवं उपग्रह आदि संचार प्रणाली इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम है। इस कड़ी में मोबाइल फोन का नाम आता है। वर्तमान समय मोबाइल क्रांति का समय है। मोबाइल फोन में सूचना का आदान–प्रदान ध्वनि के रूप में ही होता है। टेलीफोन तो किसी एक स्थान पर ही स्थित होता है, जबकि मोबाइल फोन को उसकी सीमा के अंतर्गत हम किसी भी स्थान पर ले जा सकते हैं। टेलीफोन में सूचनाएं तारों से प्रवाहित होती हैं। जबकि मोबाइल फोन में सूचनाएं अति सूक्ष्म ध्वनि तंरगों के रूप में वायु मंडल में प्रवाहित होती हैं।

सर्वप्रथम ग्राह्मवेल ने 1876 में टेलीफोन का अविष्कार किया जो एक वायरलेस से संबंधित था। टेलीफोन के द्वारा व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर बसे अपने परिजनों से बात कर सकता था, मगर यह सेवा किसी स्थान विशेष तक ही सीमित होती थी, क्योंकि यह एक वायरलेस के माध्यम से कार्य करता था। आवश्यकता ऐसे यंत्र की हुई जो स्थान विशेष के दायरे से हट कर कार्य करे तब बेल लेबोरेटरीज के इंजीनियरों द्वारा मोबाइल फोन बेस स्टेशनों के लिए 1947 में सेल का अविष्कार किया गया और 1960 के दशक में बेल लेबोटरीज ने इसे आगे विकसित किया। द्वितीय विश्वयुद्ध और 1950 के दशक में सिविल सेवाओं के दौरान सेना में इस सेल का उपयोग किया गया जिसे रेगिनाल्ड केस्सेंडेन रेडियो टेलीफोन के रूप में प्रदर्शित किया।

सामाजिक संबंधों में दूरियाँ बढ़ाने में मोबाइल काफी भूमिका अदा कर रहा है। दुःख हो या सुख व्यक्ति दो मिनट मोबाइल फोन से बात करके ही अपनी सामाजिक जिम्मेदारी की इतिश्री कर देता है। माता–पिता एवं बच्चों से मोबाइल फोन का स्थान सुविधा के कारण उच्च हो गया है जो कि पारिवारिक दूरियाँ बढ़ाने में काफी हद तक पर्याप्त है। कार एवं मोटर साइकिल चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं। जिसके कारण पारिवारिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।

मोबाइल फोन से भेजे जाने वाले एस.एम.एस. व्यक्ति के ऊपर मानसिक प्रभाव डालते हैं। यह एक लत के तौर पर देखा जाता है। कई बार इनकी वजह से दुर्घटना होने की खबरें भी आती हैं। दाम्पत्य जीवन में मोबाइल फोन पति–पत्नी के बीच किसी तीसरे का आभास दिलाता है। जिस कारण परिवार में कलह के साथ ही तलाक की स्थिति भी बनती है। नई पीढ़ी में संचार का यह साधन, अनेकों बुराइयों को जन्म दे रहा है। झूठ, चोरी, ब्लैकमेलिंग, अश्लील एस.एम.एस., अपहरण एवं अनैतिक आचरण सोचना व करना व्यक्ति के लिए आसान हो गया है।

मोबाइल फोन का आर्थिक प्रभाव भी समस्या का कारण है। बजट से अधिक खर्च मोबाइल फोन के कारण होने लगा है। बच्चों का जेब खर्च केवल मोबाइल फोन पर खर्च होने लगा है। मोबाइल फोन के उपयोग के सकारात्मक प्रभाव को देखें तो मोबाइल फोन ने व्यावसायिक क्रांति का रंग ही बदल दिया है। सुदूर गाँव से रोजगार एवं शिक्षा के लिए नगर आए बालक–बालिका समय–समय पर अपने परिजनों से बात कर सलाह ले सकते हैं। कामकाजी महिलाओं को घर एवं बाहर दोनों कार्य क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना आसान हो गया है। समय पूर्व सूचना प्राप्त हो जाने से समस्या के निराकरण एवं कार्य के संपादन में मदद मिलती है। समाज के उन्नति में मोबाइल फोन मददगार साबित हो रहा है। इस प्रकार सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में मोबाइल फोन का अपना अलग महत्व है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

पूर्व साहित्य की समीक्षा से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पूर्व अनुसंधानों, पुस्तकों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसमें की एक शोधकर्ता को अपनी समस्या की परिकल्पनाओं का निर्माण करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता द्वारा किये गये पूर्व अध्ययन साहित्य का विवरण निम्नानुसार है –

मित्तल और कुमार (2000) ने 'मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव' शोध कार्य करने के उपरांत उन्होंने पाया कि मोबाइल फोन कृषि सेवाओं के रूप में किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने में सहायक है। कृषि बाजार में मोबाइल फोन और नेटवर्क की बढ़ती उपयोगी जानकारी एवं अवसर उपलब्ध कराने में सहायक है। विशेष रूप से अधिक समृद्धि समय पर मूल्य की जानकारी मिलने से किसानों को लाभ एवं उत्पादन में वृद्धि भी होती है।

सैडी प्लांट (2001) ने मोबाइल फोन का सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मोबाइल फोन का उपयोग व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर अधिक प्रभाव डालता है। मोबाइल फोन सामाजिक संबंधों को अधिक मजबूत बनाने एवं संबंधों में नजदीकियाँ लाने में सहायक है और व्यक्ति के निजी जीवन में हस्तेक्षप भी करता है।

अब्दुल्ला (2003) के अनुसार मोबाइल फोन का प्रभाव हमेशा मानव के लिए स्वास्थ्य निहितार्थ के मुद्दों के साथ ही जुड़ा हुआ है। मोबाइल विकिरण पर कैंसर विकसित होने का खतरा दोगुना हो सकता है, इसके इस्तेमाल से मस्तिष्क गतिविधि में वृद्धि, कान के आस–पास नसों को नुकसान हो सकता है। मोबाइल फोन से जैविक प्रभाव भी पड़ सकता है।

ब्रीतोलिनी (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि मोबाइल फोन ज्ञान और जानकारी के लिए महत्वपूर्ण घटक है, उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से कृषि विकास में तेजी और सुधार के साथ–साथ विपणन और वितरण में भी मोबाइल फोन का सबसे बड़ा योगदान है, हितधारकों के बीच बातचीत की लागत को कम करने तथा उत्पादन चक्र में किसानों को मदद भी प्राप्त होती है तथा बिक्री भी समय पर एवं सही कीमत तय होती है।

शाबीमुल्लाह खान (2011) ने मदुराई में मोबाइल फोन के उपभोक्ताओं में कंपनी बदलने की प्रवृत्ति पर अध्ययन किया और पाया कि भारत में हर महीने दस लाख नए मोबाइल फोन उपभोक्ता जुड़ते हैं। भारत में मोबाइल फोन की अनेक कंपनियाँ हैं। यह कंपनियाँ ग्राहकों को अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं लेकिन साथ ही उपभोक्ताओं की भी कई ऐसी समस्याएँ और मांग हैं जिन्हें ये कंपनियाँ पूरी नहीं कर पा रही हैं। जिनसे उपभोक्ताओं में असंतोश का भाव भी उभर रहा है। उपभोक्ता पुरानी कंपनियों को बदलकर नयी कंपनी की सेवाएँ ले रहे हैं।

मेटी हेवीरीला (2011) ने मोबाइल फोन के फीचरों के चुनाव तथा उसके उपभोक्ता की संतुष्टि पर पड़ने वाले असर तथा पुनः खरीद में इसकी भूमिका पर अध्ययन किया। इन्होंने फिनलैंड में पुरुषों के बीच मोबाइल फोन के फीचर के चुनाव में प्राथमिकताओं को तय करने के संबंध में बताया कि बैटरी, टॉक टाइम को फीचर के चुनाव के वक्त प्रतिभागियों ने सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी। उपभोक्ताओं ने मोबाइल फोन में व्यावसायिक उपयोगिता, मोबाइल फोन के अन्तर्गत आने वाली सहायक सेवाएं, रिंग टोन, गेम्स, डिजाइन, पार्ट्स तथा मजबूती को अधिक ध्यान दिया तथा इन्हीं सब का संबंध पुनः खरीदी से है।

अध्ययन का उद्देश्य

यदि हम कोई कार्य करते हैं तो उस कार्य को करने के पीछे हमारा कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। शोध कार्य पूर्ण करने हेतु अध्ययन का उद्देश्य जानना आवश्यक है क्योंकि उद्देश्य ही समस्या के समाधान करने में शोधकर्ता की सहायता करता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययन विषय की प्रकृति के आधार पर निम्नखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. मोबाइल फोन धारकों के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।
2. मोबाइल फोन की दैनिक जीवन में उपयोगिता ज्ञात करना।
3. मोबाइल फोन का सामाजिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. मोबाइल फोन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करना।
5. मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान का आधार परिकल्पना ही होती है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना के अभाव में संभव नहीं है। परिकल्पना का तात्पर्य पूर्ण चिंतन से है अर्थात् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना होती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है:–

1. मुजफ्फरनगर में सामाजिक तथा पारिवारिक संबंधों में मोबाइल के प्रभाव का अत्यंत व्यापक तथा अंतरंग है।
2. समाज के सभी वर्गों में दैनिक जीवन का उपयोगी तथा अनिवार्य अंग है।
3. मोबाइल का प्रभाव मुजफ्फरनगर निगम क्षेत्र में समाज के सभी वर्गों में पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों के लिये विघटनकारी सिद्ध हो रहा है।
4. मोबाइल फोन के कारण सामाजिक संबंधों में नजदीकियों की अपेक्षा दूरियां बढ़ रही हैं।
5. मोबाइल फोन का शारीरिक प्रभाव की अपेक्षा मानसिक प्रभाव अधिक पड़ता है।

शोध प्रविधि

ज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य अपरिहार्य है। शोध कार्यों द्वारा उन प्रश्नों का उत्तर जानने का प्रयास किया जाता है। जिनका उत्तर उपलब्ध नहीं है, उन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान युग में शोध या अनुसंधान का अत्याधिक महत्व है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र से संबंधित तथ्यों का प्रमाणीकरण, नवीनीकरण, एवं सत्यापन अनुसंधान के द्वारा ही किया जा सकता है।

तथ्यों का सारणीयन

शोध कार्य में मुजफ्फरनगर में जनसंचार साधनों के सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित वास्तविक एवं विश्वसनीय आँकड़ों को प्राप्त करने के लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ों को एकत्र कर पूर्ण किया गया है। प्राथमिक आकड़ें स्वयं कार्य स्थल पर जाकर मूल स्रोतों द्वारा एकत्र किये गये हैं। जबकि द्वितीयक आंकड़ें मोबाइल से संबंधित विभिन्न प्रकाशित–अप्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, शासकीय प्रतिवेदनों आदि से एकत्र कर प्रयोग किये गये हैं।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि मुजफ्फरनगर में मोबाइल उपयोग करने वाले 50 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार किया गया जिसमें 15 प्रतिशत लोग नौकरी, 35 प्रतिशत लोग अध्ययनरत, 30 प्रतिशत कृषि से संबंधित कार्य, 20 प्रतिशत लोग मजदूरी, 10 प्रतिशत लोग अन्य कार्य में लगे हुये हैं।

अध्ययन क्षेत्र से संकलित आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट है कि मुजफ्फरनगर में मोबाइल उपयोग करने वाले 18 प्रतिशत लोग संयुक्त परिवार में एवं 82 प्रतिशत लोग एकाकी परिवार में रह रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र से संकलित आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट है कि नगरीय समाज में मोबाइल का प्रभाव मुख्यतः सभी क्षेत्रों में पड़ा है। चिकित्सा के क्षेत्र में 30 प्रतिशत मोबाइल का प्रभाव पड़ा है। प्राचीन समय में स्वास्थ्य केन्द्रों में हस्तलिखित पंजीयन पर्ची मिलती थी, दवाओं तथा डाक्टरों से सीधा संवाद और बीमारियों का इलाज होता था, लेकिन मोबाइल के प्रभाव के कारण ऑनलाइन पंजीयन पर्ची, तथा एक्सरे–मशीन, सोनोग्राफी द्वारा बीमारियों का पता लगा लिया जाता है। मोबाइल के कारण स्वास्थ्य केन्द्रों में पारदर्शिता आ गई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी मोबाइल का 30 प्रतिशत प्रभाव पड़ा है। जब से मोबाइल का प्रभाव पड़ा है तब से ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया शुरू की गयी है, जिसके कारण प्रवेश प्रक्रिया आसान, पारदर्शी और सुनिश्चित हो गयी है। व्यापार के क्षेत्र में भी मोबाइल का भी प्रभाव पड़ा है। व्यापार ज्यादातर आमने–सामने से होते थे परन्तु व्यापार के कुछ ऐसे क्षेत्र भी हैं जो मोबाइल से प्रभावित हुए हैं जैसे ऑनलाइन शापिंग।

मोबाइल का प्रभाव मनोरंजन के क्षेत्र में 30 प्रतिशत पड़ा है। प्राचीन समय में ग्रामीण समाज में मनोरंजन के साधन के रूप में लोक कथाएं, कजलियां, दादर, फाग, लोकगीत तथा चौपाल व नृत्य थे। मोबाइल के कारण इनका स्थान, मोबाइल गेम, टेलीविजन, संगीत ने ले लिया है।

बैंकिंग के क्षेत्र में मोबाइल का प्रभाव सर्वाधिक 40 प्रतिशत पड़ा है। मोबाइल के प्रभाव के कारण जहाँ पहले लेन–देन सीधे हाथों द्वारा होकर पासबुक में बनाया जाता था, राशि शेष हाथ से लिख दी जाती थी। आज कम्प्यूटरों, प्रिन्टरों और गणना मशीन द्वारा लेन–देन किया जाता है। प्रिन्टरों द्वारा पासबुक में जमा और शेष राशि की एंट्री दी जाती है। सरकारी कर्मचारियों का वेतन मिलने की जानकारी भी आज मोबाइल पर मैसेज द्वारा आ जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज में मोबाइल का प्रभाव पड़ा है। मोबाइल के कारण ग्रामीण व्यवस्था में और कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है।

अध्ययन क्षेत्र से संकलित आंकड़ों के अध्ययन के आधार पर युवा वर्ग में मोबाइल का प्रयोग का स्तर 35 प्रतिशत है तथा वयस्क वर्ग में 99 प्रतिशत और वृद्ध वर्ग में 20 प्रतिशत यानी सबसे कम। वृद्ध वर्ग में मोबाइल का प्रयोग किया जाता है तथा अधिकतर बुजुर्ग व्यक्ति की–पैड के मोबाईल फोन को दैनिक जीवन में उपयोग करना पसन्द करते हैं। उनके दृष्टिकोण से आज के एंड्रायड फोन को चलाना जटिल कार्य है।

अध्ययन की कठिनाइयाँ एवं निराकरण

मोबाइल फोन एक निजी संपत्ति है। जिसके उपयोग के बारे में विवरण देना या लेना दोनों ही दुष्कर कार्य है। व्यक्तिगत सवाल होने के कारण सही जवाब जानने के लिए अत्यधिक विश्वास में लिया जाना आवश्यक होता है। ताकि सही जानकारी प्राप्त हो सके। प्रस्तुत शोध कार्य में जनपद मुजफ्फरनगर के उत्तरदाताओं से शोध अध्ययन विशय से संबंधित तथ्य संकलन करने में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा

1. अध्ययन क्षेत्र में तथ्य संकलन के समय उत्तरदाताओं के द्वारा समयाभाव की समस्या उत्पन्न हुई।
2. मोबाइल फोन उपयोग संबंधी विभिन्न प्रकार की बातें उत्तरदाता नहीं बताना चाहते थे। किन्तु तथ्य गोपनीय रखने की बात जानकर सहयोग देने को तैयार हो गए।
3. मोबाइल फोन से संबंधित आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक बातें बताने में झिझक देखने को मिली तथा वे अपनी गोपनीय जानकारी अन्य के साथ साझा करना नहीं चाहते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समाज में मोबाइल का प्रयोग हमारे निजी जीवन की अत्यन्त अंतरंगता में बहुत तेजी से हुआ है। इस कारण संबंधों को जोड़ने के स्थान पर यह संबंधों को तोड़ने का कारक भी बनने लगा है। इस विषय पर सम्पूर्ण विश्व में समाजशास्त्री समाज को जागरुक करने का प्रयास करने में लगे हैं। आज बच्चों में मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण उनमें सामाजिक अलगाव देखने को मिल रहा है। बच्चों में आंखों में जलन, चिड़चिड़ापन जैसी समस्यायें देखने को मिल रही हैं। आज व्यक्ति के लिए मोबाइल फोन की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गयी है। दैनिक जीवन में सामजिक सम्पर्क के साथ–साथ कृषि के क्षेत्र में मोबाइल फोन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। किसानों के लिए गन्ने के भुगतान एवं मांग से सम्बन्धित जानकारी मोबाइल पर संदेशों के द्वारा प्राप्त की जाती है। आज आदमी के जीवन के प्रत्येक पहलू में मोबाइल फोन महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। कुछ समय पहले तक मोबाइल सामाजिक सम्बन्धों में नजदीकियां बढ़ाने के महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जाता था लेकिन आज परिवारों में कलह, बच्चों की पढ़ाई में बाधक तथा सामाजिक सम्बन्धों में दूरियां पैदा करना एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में दिखाई दे रहा है। आज इस बात की आवश्यकता है कि व्यक्ति दैनिक जीवन में मोबाइल फोन का प्रयोग निश्चित समय के लिए किया करे जिससे जरूरी आवश्यकतायें पूरी हो जायें तथा अनावश्यक रूप से प्रयोग करने से बचा जा सके। जिससे इसके होने वाले नुकसानों को दूर किया जा सकता है। बच्चों में यह एक तरफ जहां मनोरंजन के स्वस्थ साधनों एवं खेलकूद में रूचि कम करने का खतरा पैदा करता है, वहीं दूसरी ओर माता–पिता के साथ पर्याप्त समय न बिता पाने के कारण एकाकीपन के बोझ को भी बढ़ाता है। इन मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों के अतिरिक्त शारीरिक स्वास्थ्य पर भी मोबाइल के अधिक प्रयोग के दुष्परिणाम देखने में आ रहे हैं। इसका अधिक मात्रा में उपयोग न करने वालों पर भी जगह–जगह लगे मोबाइल टावर की विकिरणों के कारण स्वास्थ्य पर कैन्सर जैसी गम्भीर बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। एक ताजा स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार कैन्सर का मुख्य कारण मोबाइल टावर से निकलने वाला विकिरण है। अतः यह कहने में कोई बुराई नहीं है कि विज्ञान के इस अविष्कार ने जहां जीवन में जानकारी तथा सूचनाओं को सरल बना कर वरदान का कार्य किया है वहीं स्वास्थ्य पर एवं सामाजिक संबंधों एवं आर्थिक रूप से होने वाला नुकसान भी अभिशाप से कम नहीं है।

संदर्भ

1. Matti, Haverila. (2011). Mobile phone feature Preferences, customer satisfaction and repurchase intent among male users. Australasian Marketing Journal 19. 4.

2. Khan, Shabimullah. (2011). Switching tendencies of Consumers of mobile Phone services in Madurai District.k Journal of Commerce 3.4.
3. ब्रीतोलिनी. (2004). संचार तकनीकी की जानकारी अनाज सुरक्षा के लिए, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य पॉलिसी इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन, यू.एस.ए.।
4. अब्दुल्ला. (2003). मोबाइल फोन के उपयोग का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान– के ए सी एस टी, पी ओ बॉक्सः साउदी अरब।
5. मित्तल., कुमार. (2000). मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव–एक आर्थिक विश्लेषण, साप्ताहिक शोध पत्र. कृषि आर्थिक रिसर्चः चंडीगढ़।
6. सर, विलियम, स्टुअर्ट. (2008). मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव. संचार तकनीकीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।
7. मोबाइल फोन का इतिहास. www.google.com.
8. गोयल, हेमन्त कुमार. कम्प्यूटर शिक्षा. आर. लाल बुक डिपोः मेरठ।
9. (2008). कम्प्यूटर संचार सूचना. इंडिया पब्लिकेशनः नई दिल्ली. अगस्त।